नीतिकाव्य का अर्थ और महत्व

डॉ0 आरती,

सहायक प्रोफेसर(हिन्दी विभाग), लाला महोदव प्रसाद वर्मा बालिका महाविद्यालय, गोसाईंगंज, लखनऊ।

नीतिकाव्य का अर्थ

मानव समाज और नीति का गहरा सम्बन्ध है। जहाँ मानव समाज में नीति की सराहना की गयी है वहीं अनीति पथ की न केवल निन्दा की गयी अपितु उसे सुसंस्कृत समाज में हेय एवं त्याज्य कहा गया।

''जहाँ तक नीति शब्द की व्युत्पत्ति का प्रश्न है। यह शब्द 'नी' धातु में करण तथा अधिकरण में 'क्तिन' प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है।''[1] हिन्दी शब्दसागर में नीति के अर्थ इस प्रकार दिये गये है– ''नीति का अर्थ है ले जाना, ले चलने की क्रिया, भाव, ढंग, व्यवहार की रीति, आचार पद्धति, व्यवहार की वह रीति जिससे अपना कल्याण हो ओर समाज को भी कोई बाधा न पहुँचे, वह चाल जिसे चलने से अपनी भलाई हो ओर प्रतिष्ठा आदि हो और दूसरों की कोई बुराई न हो, लोक या समाज के कल्याण के लिये अनुचित ठहराया हुआ अनाचार, व्यवहार, लोक मर्यादा के अनुसार व्यवहार, सदाचार, अच्छी चाल, राजा व प्रजा की रक्षा, राजा का कर्त्तव्य, राजविद्या, राज्य की रक्षा के लिये काम में लायी गयी पंक्ति, राजाओं की चाल, जो वे राज्य की प्राप्ति तथा रक्षा के लिए चलते है, पॉलिसी, किसी कार्य की सिद्धि के लिये चली जाने वाली चाल, युक्ति, उपाय, हिकमत, संबंध, दान, प्रदान है।[2]

नीति व्यापक अर्थ में वह सिद्धान्त, मार्गदर्शन अथवा सुझाव है जो व्यक्ति के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक जीवन में व्यवहार करने की रीति निर्देशित करता है।

नीति सामाजिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने का एक उपाय है। नीति दूसरे अर्थों में मंगलविधान एवं धर्माचरण का मार्ग है, इसमें औचित्य एवं सदाचार का भी सन्निवेश है। अतः नीति का अचारण मानव–जीवन के उचित मार्ग का परिचायक है। डॉ0 रमेश कुंतल मेघ का विचार है कि ''नैतिक मूल्यों के बिना कोई भी सामाजिक जीवन नहीं पनप सकता। इसमें स्व–संरक्षता तथा समाज–व्यवस्था की वृत्ति प्रधान होती हैं।[3]

साहित्य मुख्यतः लोक जीवन को अपना आधार बनाता है और नीति का प्रयोजन साहित्य के अन्तर्गत लोक के विभिन्न क्षेत्रों में सम्यक् आचरण का सन्देश प्रस्तुत करना है। मानव–जीवन के लक्ष्य की सिद्धि में नीति उचित मार्ग निर्देशित करती है। अतः जिस विद्या के द्वारा अपने अभीष्ट अर्थ पर पहुँचा जाये अथवा अभीष्ट प्रयोजन की प्राप्ति जिस विद्या से हो वह नीति है।

नीति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए हिन्दी साहित्य कोष में कहा गया है कि – ''समाज को स्वस्थ एवं संतुलित पथ पर अग्रसर करने एवं व्यक्ति को धर्मार्थ काम तथा मोक्ष की उचित रीति से प्राप्ति कराने के लिए जिस विधि–निषेधमूलक सामाजिक, व्यावहारिक, आचारिक, धार्मिक तथा राजनैतिक आदि नियमों का विधान देशकाल और पात्र के सन्दर्भ में किया जाता है उसे नीति शब्द से अभिहित करते हैं।[4]

नीति मानव के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। अनेक धर्मशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों और कवियों ने नीति सम्बन्धी अनेक विचार व्यक्त किये

हैं, जिन पर आचरण कर व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है और हित–अहित का विचार कर अपना और समाज का कल्याण कर सकता है। जिस काव्य में नीति विषयक सिद्धान्त या विचार प्रतिपादित किये जाते हैं, उसे नीतिकाव्य कहा जाता है।

नीतिकाव्य का महत्व

इस संसार का निर्माण सुख–दुख, हानि–लाभ ,जीवन–मरण, यश–अपयश, सत् और असत् तत्वों के योग से हुआ है। सुख–दुख में सुख, यश–अपयश में यश और जीवन–मरण में जीवन सभी को प्रिय है। समाज में जाति और मानव का गहरा सम्बन्ध है नीति के विरूद्ध आचरण करने पर मनुष्य कुमार्गी हो जाता है और ऐसे मनुष्य को किसी हितैषी का उपदेश भी अच्छा नहीं लगता है। किन्तु इन तत्वों का बलात् हरण न हो इसलिये समाज में कुछ ऐसे नियमों का निर्धारण किया गया जिनके पालन से व्यक्ति सुखी होता है और दूसरों के सुख में बाधक नही होता है।

नीतिकाव्य एक ऐसा काव्य है जो व्यक्ति को सुख, शान्ति और आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने का मार्ग दिखाता है और विधि–निषेध का विधान कर व्यक्ति को ऐसे कर्म करने से रोकता है जो उसके तथा दूसरों के कल्याण में बाधक हो। नीति, मानव को ऐसी शिक्षा देती है, जिसमें वह स्वयं सुख से जिये और दूसरों को भी जीने दे। चाणक्य, भर्तृहरि कबीर, तुलसी, रहीम और गिरधर कविराय जैसे चिन्तकों ने अपने नीतिपरक कथनों से समाज में व्यवस्थित जीवन व्यतीत करने के लिये व्यक्तियों को मार्ग दिखाया। सामाजिक व्यवस्था में अनुशासन, संरक्षण और मर्यादा बनाये रखने के लिये नीति का पालन अनिवार्य हैं मानवता मानव धर्म है। नीति मानवता का धर्म है, यही कारण है कि धर्म के रूप में नीति को स्वीकार करना और अधर्म मानकर अनीति को अस्वीकार करना मानवता के विकास में सहायक है।

मानव सत्पथ से विचलित न हो इसलिए हमारे धार्मिक ग्रन्थ, शास्त्र एवं आचार्य निरन्तर सावधान करते रहते है। सदाचारपूर्वक जीवन–यापन मानव–जीवन की सम्पत्ति है क्योंकि सौहार्द, प्रेम, दया, सहिष्णुता, समभाव, शान्ति, सन्तोष, क्षमा, शौच, तप, त्याग, सत् का अनुपालन आदि सदाचार और नीति को स्थिर करते है। मानव जब तक सत्य, सदाचार, अहिंसा आदि मानवीय गुणों से युक्त होकर कर्तव्य–पालन करता हुआ जीवन–पथ बढ़ता है तभी तक उसे सफलता प्राप्त होती है किन्तु जैसे ही सदाचार से मनुष्य का नाता टूट जाता है, वह मार्गच्युत होकर नाना प्रकार के दुखों भोगता हुआ पतन के मार्ग पर गिरता जाता है। इसी कारण मानव को नीति का महत्व समझना चाहिये और नीतिपरक आचरण करना चाहिये। मनु ने तो सदाचार की महत्ता को स्वीकार किया है कि सदाचारी को मानव जीवन में अनके उत्तम पदार्थ और स्थितियाँ प्राप्त होती है। इसके विपरीत सदाचार की उपेक्षा कर दुराचरण का पथ अपनाने वाले दुर्गति के भागी बनते हैं। मनु का कथन है कि मानव जीवन अमूल्य है। सदाचारी मनुष्य अपने आचरण के बल से लम्बी आयु प्राप्त करता है। अक्षय धन प्राप्त करता है तथा अवगुणों का विनाश करता है।

''आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सिताः प्रजाः।

आचाराद्धनमक्षरूयमाचारों हन्त्यलक्षणम्।।''[5]

नीति मानव जीवन की सफलता का आधार बिन्दु है। किसी भी देश, समाज और व्यक्ति का विकास, मानव का उत्थान तथा पतन नीति पर ही निर्भर करता है। नीति का उल्लंधन तथा नीति की आचार संहिता की अवहेलना से मानव समाज अशान्तिग्रस्तहो सकता है।

शास्त्रसम्मत कर्म करना ही नीति है। सत्प्रवृत्ति, सदाचरण, विवेक, अहिंसा, सत्य,

अस्तेय आदि गुण एवं 'अन्तिम सत्य' के प्रति ले जाने वाले मार्ग नीति के द्वारा ही दर्शित होते है। अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, समाजशास्त्र, धर्मशास्त्र, जीवनशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र आदि के साथ भी नीति का घनिष्ठ सम्बन्ध है। दुराचार का सहारा लेने वालों की दुर्गति का वर्णन मनुस्मृति में हुआ है। मनु जी कहते है कि –दुराचारी की जगत में निदा होती है। वह लम्बे समय तक दुख भोगता है और अन्त मे व्याधियों से ग्रसित होकर अल्पायु में ही शरीर छोड़ देता है–

''दुराचारो हि पुरूषो लोके भवति निन्दितः।

दुःखभागी च सततं व्याधितोऽल्पायुरेव च।।''[6]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः नीतियाँ मानव के आचरण को नियमित एवं मर्यादित करने के लियं बनी हैं जिससे मनुष्य करणीय और अकरणीय, उचित और अनुचित, विधि और निषेध के निर्णायक तत्वों को पहचानकर उन्हें अपनी जीवन में उतार सकें। अतः यह कहा जा सकता है कि नीति काव्य व्यक्तियों को असद् मार्ग से सन्मार्ग की आरे चलने को प्रेरित करता है।

सन्दर्भ– ग्रन्थ सूची

1. कल्याण नीतिसार अंक (2002 ई0)–सं0 राधेश्याम खेमका–पृष्ठ सं0– 199
2. हिन्दी शब्द सागर– नागरी प्रचारिणी सभा काशी– पृष्ठ सं0– 2684
3. सौन्दर्य : मूल्य और मूल्यांकन– डॉ0 रमेश कुन्तल मेघ– पृष्ठ सं0– 49
4. हिन्दी साहित्य कोष– सं0 डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा– पृष्ठ सं0– 20
5. मनुस्मृति– मनु– पृष्ठ सं0– 4/156
6. मनुस्मृति– मनु– पृष्ठ सं0– 4/157

Copyright © 2014. *Dr. Aarti*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.